urge upon the Government of India to allocate more funds to the Rajasthan Government for subsidising the prices of fertilizers on the basis of land holdings of small and marginal farmers as already prescribed by the Ministry of Rural Development. In this way it is hoped that another ten lakh poor farmers of Rajasthan who have no other source of livelihood get the benefit.

SHRI B. L. PANWAR (Rajasthan): Madam, I associate myself with Shri Gaj Singh.

Incident of stripping of a man at police station, Bahadurgarh (Haryana)

श्रीमती सुषमा स्वराज (हरियाणा) : उपसभापति महोदया, अभी कल ही इस सदन में एक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के माध्यम से हमने समाज के कमजोर तबकों पर होने वाले अत्याचारों की चर्चा की थी और स्वयं कल्याण मंत्री जी ने सदस्यों के द्वारा जतायी गयी चिन्ता के साथ खुद को संबद्ध करते हुए इस सदन में यह आश्वासन दिया था कि इस तरह के अत्याचारों में कमी लाने का प्रयास किया जाएगा और दोषियों के खिलाफ सख्त-से-सख्त कार्यवाही की जाएगी।

महोदया, मैं इस एक दुखद संयोग कहूंगी कि अभी उस आश्वासन को 24 घंटे भी नहीं बीते थे कि हरियाणा के एक गांव में ऐसा मामला प्रकाश में आया जो लज्जा और शर्म की तमाम सीमाओं को पार कर गया है। इस घटना का इससे भी ज्यादा भयावह पहलू यह है कि इस बार अत्याचार उस वर्ग के द्वारा किया गया है जिस वर्ग के ऊपर स्वयं अत्याचारियों के खिलाफ कार्यवाही करने की जिम्मेदारी सरकार ने डाली है। महोदया, पुलिस वर्ग के पास, पुलिस कर्मियों के पास लोग इंसाफ की अपेक्षा लेकर जाते हैं, न्याय की गुहार करने जाते हैं, उन्हें अपना रक्षक समझते हैं, लेकिन हरियाणा की बहादुरगढ़ तहसील के बराही नामक गांव में स्वयं पुलिस-कर्मियों द्वारा यह कहर बरपाया गया है। महोदया, इस रोंगटे खड़े करने वाली घटना का उल्लेख आज टाइम्स आफ इंडिया और नवभारत टाइम्स में बहुत सुर्खियों में किया गया है ... (व्यवधान) ..: महोदया, यह एक ऐसा मसला है, जिसके लिए मैं आपका ध्यान चाहूंगी। आप अपनी बात कर लें, मैं आपका ध्यान चाहूंगी, आपने शायद पढ़ा नहीं है।...

उपसभापति : मेरा ध्यान है। आप बोलिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज : महोदया, नवभारत टाइम्स का यह केप्शन "बराही गांव पर पुलिस का कहर" और टाइम्स आफ इंडिया का यह केप्शन—

"Men 'stripped' before their women"

है। इसकी तस्वीर ऐसी है, देखकर दिल दहलता है और घटना के तथ्य अगर आप पढ़ेंगी तो एक बार खौफनाक लगेंगे आपको।

उपसभापति : मैंने पढ़ा है। I read it.

श्रीमती सुषमा स्वराज : यह घटना इस तरह से घटी है, महोदया, कि इस बराही गांव में जो बहादुरगढ़ तहसील के अंदर स्थित है, एक पुलिस पार्टी किसी दीवाल के झगड़े के सिलसिले में कुछ लोगों को गिरफ्तार करने के लिए गई। वहां उन्होंने महिलाओं को थाने ले जाना चाहा। वहां के लोगों ने, घर वालों ने महिलाओं को थाने ले जाने से रोका। इस बीच में कुछ पत्थराव की घटनायें, कुछ मारपीट, कुछ कहा-सुनी गांव वालों और पुलिस वालों के बीच में हो गई। पुलिस वाले उस समय तो वहां से चले गए, लेकिन अगले दिन पूरे दल-बल के साथ, पूरी फोर्स लेकर नियोजित ढंग से उस गांव में पहुंचे। गांव में मर्दों को इकट्ठा करके उन्हें निर्वस्त्र करके महिलाओं के सामने खड़ा कर दिया और महिलाओं को मजबूर करके कहा कि इनको देखो। वहां की महिलाओं ने अपने चेहरे अपने हाथों से, अपने पल्लुओं से ढंकने चाहे तो उनको बेरहमी से पीटा गया और उनके हाथ उनके चेहरों से हटा दिए गए। फिर, महिलाओं के हाथ में चप्पल पकड़ा करके बुजुर्गों को सामने बैठा दिया गया और महिलाओं से कहा गया कि चप्पलों से इन बुजुर्गों की पिटाई करो। जब उन महिलाओं ने मना किया, एतराज किया तो उन्हें बेतहाशा पीटा

[श्रीमती सुषमा स्वराज]

गया। इतना ही नहीं, दूध पिलाती हुई आठ दिन की जच्चा सुनीता देवी को बालों से पकड़-पकड़ कर घसीट कर बाहर लाया गया, एक अस्सी साल की बूढ़ी छोटू देवी को मार-मार कर अधमरा कर दिया गया।

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY (Andhra Pradesh): It is not only shameful but disguesting.

श्रीमती सुषमा स्वराज : महोदया, मुझे समझ नहीं आता, आदमी इतना वहशी कैसे हो जाता है? कौन-सी चीज उसे इतना क्रूर, इतना निर्मम, इतना कठोर, इतना संवेदन-विहीन बना देती है कि न वह अपनी मां की उम्र की बूढ़ी महिला को बख्शता है, न अपनी बहन की उम्र की एक छोटी महिला को बख्शता है?

महोदया, इससे भी ज्यादा दुखादायी बात यह है कि जब यह संवाददाता, इस अखबार के, वहां गये। वहां के डिप्टी कमीश्नर, वहां के एस०एस०पी० से बात की तो बजाय इसके कि वे पुलिसकर्मियों के इस एक्शन की निंदा करते, उसके ऊपर दुख जताते, उनके ऊपर कोई कार्यवाही करने का आश्वासन देते, उनका बचाव करते हुये नजर आये और कहा कि क्रोध में ऐसा कर दिया होगा। मैं मानती हूं कि क्रोध में आदमी अपना विवेक खो बैठता है। अगर यह घटना उसी दिन घटती, जिस दिन पुलिस वालों की पिटाई हुई थी तो शायद क्रोध की आड़ लेकर थोड़ा स्पष्टीकरण एक-दो फीसदी दिया जा सकता था, लेकिन उस दिन वहां से जाने के बाद, घर बैठकर योजना बनाकर उन लोगों को साथ लेकर आये, जो पहले दिन गांव की पिटाई का शिकार भी नहीं हुये थे और उन लोगों ने यह कुकर्म उस गांव के अन्दर किया है।

महोदया, मैं आपके माध्यम से इस विशेष उल्लेख के माध्यम से इस घटना पर गृह मंत्री से इस बात का आश्वासन चाहती हूं कि वे जल्दी से जल्दी राज्य सरकार को हिदायत करें, दोषी अधिकारियों को गिरफ्तार किया जाय, नौकरियों से निलंबित करके उन पर फौजदारी मुकदमा चलाया जाये और उनको इस तरह की सजा दी जाय जो कम से कम इस तरह के अपराध करने वाले और लोगों के लिये चेतावनी की घंटी साबित हो सके। बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपसभापति : डा० अबरार अहमद।

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: Madam, what is this? It is a matter of shame. (*Interruptions*)...

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश) : होम-मिनिस्टर साहब यहां हैं। आश्वासन दें। ... **(व्यवधान)** ...

श्री रणजीत सिंह (हरियाणा) : महोदया, महिलाओं की एक कमेटी बना कर उस गांव में भेजी जाय और लेडीज-मेंबर वहां जाकर देखें, बात करें। ... **(व्यवधान)** ...

SHRI S. VIDUTHALAI VIRUMBI (Tamil Nadu): We demand a statement from the Home Minister. (*Interruptions*)...

SHRI ABDUL SAMAD SIDDIQUI (Karnataka): The Home Minister should make a statement. (*Interruptions*)...

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: We, Members of Parliament, are ready to go to the spot. (*Interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shri Abrar Ahmad. (*Interruptions*)...

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: Madam, please listen to me. (*Interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have given attention to it. The Minister has seriously taken note of it. Beyond that I can't do. (*Interruptions*)...

SHRI TINDIVANAM G. VENKATRAMAN (Tamil Nadu): You please ask the Home Minister whether he is going to make a statement. (*Interruptions*)...

1.00 P.M.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: We are willing and we are offering to go out and study it ourselves.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Any such incident which takes place, it is sameful. Whether close to Delhi or away from Delhi, it has to be condemned. I am sure the Minister has heard it. (*Interruption*) I can only condemn it. I am not the Minister in charge....

श्री रणजीत सिंह : मैडम, मेरा एक सजेशन है कि पार्लियामेंट की ओर से से लेडीज मेम्बर्स की एक कमेटी बनाई जाये और ...(व्यवधान) ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: All right, you write to the Minister and let him take it up seriously.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: But the Minister doesn't seem to be taking anything seriously. Everyday we are hearing about such atrocities. The atrocities are against women.

श्री रंजीत सिंह : मेरा आपसे एक सजेशन है मैडम ।

उपसभापति : आपको मुझे सजेशन देने से कोई फायदा नहीं है । आप सरकार को लिखिये, उससे ज्यादा फायदा होगा ।

श्री रंजीत सिंह : मेरा आपसे यह कहना है कि....

उपसभापति : आप सरकार को लिखिये, इस बारे में मुझे कहने से कोई फायदा नहीं है । आप सरकार को लिखिये । ...(व्यवधान)...

You can write to the Minister, through me; you can write a letter, through me, to the Government....

SHRI MENTAY PADMANABHAM (Andhra Pradesh): Haryana is being ruled by a Congress-I Government. The Minister is not coming forward with a statement.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: You have to give us protection...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I can give you protection if you keep quiet. If you keep on speaking, how can I give you protection? Last time there was a matter of Andhra Pradesh about a woman which was raised in this House. I had asked the Government to look into it. I told Mr. Jacob who was present in the House to find out about it. He did not and within three days he gave a statement in the House and informed Members what action had been taken. Even today Mr. Jacob is here and he is listening to it. There is no need for me everytime to give a direction. He knows his own direction, he knows what to do. He is a responsible person. Everyday something is mentioned in the House. Everyday on everything I cannot force the Minister to make a statement in the House because that statement will have no meaning. So give him time to find out...

SHRI MENTAY PADMANABHAM: Let him say that he is coming before the House with the facts.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: Mr. Jacob is a wonderful person. I hold him in the highest esteem.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI M. M. JACOB): Madam, Government takes this House very serious. Whenever any honourable Member makes mention of an important matter, Government really takes a serious note of it, Government really pursues it in the manner in which it has to be pursued. On some issues you may require a statement from the Government and on such issues Government does come before the House with a statement. That does not mean that we can react to everything that is mentioned here. Then there

[Shri M. M. Jacob]

will be a lot of confusion. We want to run the House with cooperation from everybody. We need the cooperation of all. With all seriousness whatever is necessary will be pursued. If a statement is found necessary later on, we will certainly come back to the House. But these are matters happening in States. There is no point in the Central Minister jumping at everything happening in States. We have to restrain ourselves. Naturally we have to respect the Centre-State relations and we have to restrain ourselves... (*Interruptions*).

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: We don't want a statement. We are offering our voluntary service. If you are so tight with your work, we will help you. (Interruptions).

THE DEPUTY CHAIRMAN: Dr. Abrar Ahmad.

Non-Payment of wages to 5,000 workers of Sawai Madhopur cement factory for the last four years

डा० अबरार अहमद (राजस्थान): महोदया, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि राजस्थान के अन्दर सवाई माधोपुर में एक समय में एशिया की सबसे बड़ी सीमेंट फैक्टरी हुआ करती थी, जिसको जयपुर उद्योग के नाम से जाना जाता था। आज चार वर्ष से वह फैक्टरी बन्द नहीं है मात्र उसका उत्पादन बन्द है, उसको क्लोजर डिक्लेअर नहीं किया गया है। उस फैक्टरी में चार साल से मजदूर सुबह नौकरी पर जाता है, शाम को नौकरी से वापिस आता है। अगर कोई लेट जाता है तो उसको चार्जशीट मिलती है, अगर कोई अनुपस्थित रहता है तो उसको सस्पेंड किया जाता है। लेकिन महीने के 30 दिन के बाद उसको वेतन नहीं दिया जाता। आज चार वर्ष हो गये मैडम, उस फैक्टरी में काम करने वाले मजदूरों को किसी प्रकार का कोई पारिश्रमिक या वेतन का भुगतान नहीं किया गया और उसके कारण वहां के मजदूरों की हालत इतनी खराब हो गयी है, इतनी दयनीय हो गयी है कि उनके बच्चों ने स्कूलों में पढ़ना बन्द कर दिया है, उनके घर के बर्तन बिक गये हैं और वह दाने-दाने के लिये मोहताज हो गये हैं। महोदया, हम यहां एट्रोसिटीज की बातें करते हैं और दुनिया भर की बातें करते हैं लेकिन मैं अभी गत माह का ही आपको एक उदाहरण बतलाना चाहता हूं कि एक मजदूर अपना कार्य करके शाम को घर आया, सुवा नाम था उसका। उसने आकर अपनी छोटी बच्ची से पूछा, भूखा था वह, कि तेरी मां कहां गयी है? बच्ची ने कहा कि मां आटे की व्यवस्था करने कहीं गयी हुई है। उस मजदूर ने उस बच्ची से कहा कि जा, अपनी मां को बुलाकर ला, और जैसे ही बच्ची घर से बाहर गयी तो उसने फांसी का फंदा लगाकर अपने आपको मौत के हवाले कर दिया, क्योंकि वह रोज-रोज यह जलालत नहीं देखना चाहता कि कि रोजाना काम करने जाय, लेकिन 30 दिन के बाद अपनी स्त्री या अपने बच्चों को वेतन लाकर न दे। जहां चार वर्ष से तनख्वाह न मिली हो मजदूरों को, वहां की हालत क्या होगी? आज इस तरह से पांच हजार श्रमिक बेरोजगारी से जूझ रहे हैं, 25 हजार उनके घर के सदस्य उस बेरोजगारी से जूझ रहे हैं, उन्हें सुबह-शाम की रोटी नहीं मिलती है। लेकिन आज उनके लिये कोई सोचने वाला नहीं है। महोदया, चार वर्ष से मैं इस बात को कई बार इस सदन में उठा चुका हूं। चार साल में जितनी सरकारें बदली, उनके प्रधान मंत्री और उद्योग मंत्रियों को मैंने यह बात कहीं, लेकिन जवाब एक आता है कि बी०आई०एफ० आर० में मामला चल रहा है। महोदया, जो भी रूग्ण उद्योग हैं, बीमार उद्योग हैं उन पर विचार करने के लिये बी०आई०एफ० आर० बनाया गया है। लेकिन उस बी०आई०एफ०आर० को बनाते समय यह नहीं सोचा गया कि रूग्ण उद्योगों का मामला उस बी०आई०एफ०आर० में जायेगा तो उसके अन्दर काम करने वाले मजदूरों के वेतन का क्या होगा? चार साल से मामला बी0आई०एफ०